कहूं गुसा कर वचन, सो ना वले मेरी जुबांए।
पर इत नफा क्या होएसी, तुम रहे माया लगाए।। १६ ।।

गुस्सा करके कहूं, यह अच्छा नहीं लगता। पर तुम यहां माया में रहकर लाभ क्या लोगे?

टेढ़े सुकन तुमे कहूं, सो काट करूं जुबां दूर।
पर इन मायाका तुमको, कहा होसी रोसन नूर।। १७ ।।

हे साथजी ! मैं तुम्हें लाड़ से समझाता हूं तो माया तुम्हें समझने नहीं देती। इसलिए तुम्हें खण्डनी के वचन कहने पड़ते हैं। अन्यथा मेरी जबान से कठोर वचन निकलें तो उसे काटकर दूर कर दूं।

ना पेहेचाने इन उजाले, ए दोए साख पूरन।
पीछे पिउ आगे वतन में, क्यों होसी मुख रोसन।। १८ ।।

इस तारतम वाणी के उजाले में दो-दो बार धनी के आने और गवाहियां देने पर भी तुमने धनी को नहीं पहचाना तो पीछे घर (परमधाम) में मुंह ऊंचा करके कैसे देखोगे?

पेहेले नजरों देखते, गयो अवसर टूटी आस।
निकस गए जब हाथ से, तब आपन भए निरास।। १९ ।।

पहले देखते-देखते मौका हाथ से निकल गया और आशा टूट गई थी। जब धनी हाथ से चले गए थे और हम निराश हो गए थे।

ए ठौर ऐसा विखम, नास होए मिने खिन।
स्याने हो तुम साथजी, सब चतुर वचिखिन।। २० ।।

ये ठिकाना (स्थान) बड़ा कठिन है और एक क्षण में नाश होने वाला है। हे साथजी ! तुम समझदार हो, चतुर हो और प्रवीण हो।

तुम स्याने मेरे साथजी, जिन रहो विखे रस लाग।
पांउ पकड़ कहे इंद्रावती, उठ खड़े रहो जाग।। २१ ।।

हे मेरे समझदार साथजी ! इस संसार के जहरीले रसों में मन न लगाओ। श्री इन्द्रावतीजी पांव पकड़कर कहती हैं कि इसे छोड़कर खड़े हो जाओ और जाग जाओ।

।। प्रकरण ।। १७ ।। चौपाई ।। ३६२ ।।

श्री धनीजी के लागूं पाए, मेरे पिउजी फेरा सुफल हो जाए।
ज्यों पिउ ओलखाए मेरे पिउजी, सुनियो हो प्यारे मेरी विनती।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं धनीजी के चरणों में प्रणाम करती हूं जिससे मेरा यहां आना सफल हो जाए। पहले मैंने धनी को नहीं पहचाना था। अब पहचान हो जाए, यह मेरी विनती सुनो।

मैं पेहेले ना पेहेचाने श्री राज, मोहे आड़ी भई माया की लाज।
भवसागर की किने पाई न किनार, सो तुम सेहेजे उतारे पार।। २ ।।

पहले मुझे माया की लज्जा (शर्म) थी। मैं पहचान न सकी। इस भवसागर के किनारे (पार) को किसी ने नहीं पाया। आपने बड़ी आसानी से हमें इससे पार उतार दिया है।

Nijanand App

तुम अपनी जान दया कर, धनी लेवे त्यों लई खबर।
माया गम सास्त्रों मांहें, सो त्रिगुन भी समझत नाहें।। ३ ।।

आपने अपनी अंगना जानकर ऐसे कृपा की है जैसे धनी अपनी पत्नी की खबर लेते हैं। शास्त्रों में माया के विस्तार का वर्णन है। इसको ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी समझ नहीं पाए।

सो तारतम केहे करी रोसन, और देवाई साख सास्त्रों वचन।
हम मांग लई जो माया, सो पेहेचान के खेल देखाया।। ४ ।।

आपने कृपा करके तारतम वाणी से सब भेद जाहिर कर दिया है। सभी शास्त्रों से गवाही दे-देकर हमने जिस माया को मांगा, उसकी पहचान कराकर खेल दिखाया।

उमेद करी जो सैयन, सो इत आए करी पूरन।
तुम उमेद करते मने किए, तो भी खेल देखाए सुख दिए।। ५ ।।

ब्रह्मसृष्टियों ने धाम में जो चाहना की थी, वह यहां आकर सब पूरी कर दी। आपने तो खेल देखने के लिए मना किया था, फिर भी हमारी चाहना के अनुसार खेल दिखाकर सुख दिया।

हमको खेल देखन की लागी रढ, सो इत आए देखाई कर मन द्रढ।
तुम हमको खेल देखावन काज, हमसों आगे आए श्री राज।। ६ ।।

हमको खेल देखने की बड़ी धुन लगी थी। उन्होंने यहां आकर हमें दृढ़ता देकर खेल दिखाया। हमको खेल दिखाने के लिए हमसे पहले आप (श्री राज) पधारे।

तुम बिना लाड़ पूरन कौन करे, इन माया में दूजी बेर देह कौन धरे।
तुम मोसों गुन किए अनेक, सो चुभे मेरे हिरदे में लेख।। ७ ।।

आपके बिना हमारे लाड़ (चाहना) कौन पूरे करेगा और हमारे लिए इस माया में आपके बिना कौन दूसरी बार तन धारण कर आएगा? आपने मेरे पर बहुत कृपा की है। वह मुझे अच्छी तरह याद है।

तुम पर वार डारूं जीवसो देह, तुम किए मोसों अधिक सनेह।
मैं वारने लेऊं तुम पर, मैं सुरखरु होऊंगी क्यों कर।। ८ ।।

आपने मेरे से इतना अधिक प्यार किया कि अब मैं आप पर जीव और तन कुर्बान कर दूं। मैं बार-बार आप पर न्योछावर होती हूं, वरन् मैं आपके सामने कैसे खड़ी होऊंगी?

तुम हो हमारे धनी, तो पूरी आसा लाख गुनी।
इंद्रावती चरनों लागे, कृपा करो तो जागी जागे।। ९ ।।

आप हमारे प्रीतम हो, इसलिए आपने हमारी आशाओं को लाख गुना अधिक पूरा किया। अब श्री इन्द्रावतीजी चरणों में लगकर कहती हैं, हे धनी ! अब आप कृपा करें तो हम सब जाग जाएं।

॥ प्रकरण ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ ३७१ ॥

अखंड दंडवत करूं परनाम, हैड़े भीड़के भानूं हाम।
प्रेमें देऊं प्रदखिना, बेर बेर अनेक अति घना।। १ ।।

हे धनी ! मैं आपके चरणों में प्रणाम कर और आपसे चिपटकर अपनी चाहना मिटाऊं तथा अनेक बार प्रेम से आपकी परिकरमा करूं।

Nijanand App